LIBRARY

School of Planning And Architecture ,Bhopal

S.No. 17 (July 2024)

पत्रिका पेज न .13

28/07/2024

एजुकेंशन सिस्टम को नेचर कंजर्वेशन के हिसाब से तैयार करने की जरूरत

प्रकृति संरक्षण के कोर्सेस से सुधरेगा पर्यावरण

विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस विशेष

भोपाल @ पत्रिका. स्वस्थ समाज तभी बन सकता है, जब स्वस्थ पर्यावरण हो। नेचर कंजर्वेशनिस्ट के बिना स्वस्थ पर्यावरण की कल्पना नहीं की जा सकती है। संरक्षण का काम जागरूकता के बिना संभव नहीं है। इसलिए प्रकृति संरक्षण का ज्ञान सभी में होना बहुत जरूरी है। ये काम शैक्षणिक संस्थाएं व्यवस्थित ढंग से कर सकते हैं। यह बातें पत्रिका से बातचीत में विशेषज्ञों ने कही।

कई संस्थान इस ओर कर रहे काम

प्रकृति संरक्षण पर आधारित एजुकेशनल सिस्टम अभी तक हमारे यहां तीन भागों में काम करता है, जो 'संरक्षण', 'प्रदूषण' और 'जलवायु परिवर्तन' हैं। सीएसएमआरएस, आईआईएसईआर और आईआईएफएम मुख्यत: शोध के लिए कार्य करता है। शोध को तकनीक में बदलने के लिए वाल्मी और एसपीए आदि संस्थान काम करते हैं। शोध और तकनीक के आधार पर नीति बनाने का काम मैनिट, एसपीए और आईआईएफएम जैसे संस्थान करते हैं। ग्रामीण और शहरी विकास को लेकर मैनिट और एसपीए में काम होता है। नीति व कार्य पद्धति में संतुलन बनाने के लिए एनएलआईयू न्याय पालिका का रास्ता सुझाता है। - **सौरभ पोपली,** एसोसिएट प्रो, एसपीए

प्रकृति आधारित शिक्षा गहरे करेगी संबंध

प्रकृति संरक्षण का काम सही तरीके से शैक्षणिक संस्थाओं के माध्य से ही हो सकता है, इसलिए प्राथमिक स्तर से प्रकृति संरक्षण से संबंधित पाठ्यक्रम चलाया जाए। प्रकृति-आधारित शिक्षा पर्यावरण के साथ गहरे संबंध को बढ़ावा देती है। वहीं अनुभवात्मक (प्रयोगिक) शिक्षा के माध्यम से संवेदना व जागरूकता, रचनात्मकता व सामाजिकता और व्यक्तिगत व पर्यावरण आदि का भी विकास होता है। प्रकृति आधारित शिक्षा व्यक्ति को एक जिम्मेदार नागरिक बनने में सक्षम बनाती है। इसलिए इस दिशा में काम की बहुत जरूरत है। - **डॉ. प्रदीप नंदी,** महानिदेशक, नेशनल सेंटर फॉर ह्यूमन सेत्तलेमेंट्स एंड एनवायरनमेंट, भोपाल

पर्यावरण प्रदूषण से निपटना आसान होगा

दुनिया विषय-वस्तु आधारित शिक्षा को कौशल आधारित शिक्षा में बदलने में लगी है। यदि प्रकृति और पर्यावरण की शिक्षा विभिन्न क्षेत्रों में प्रोफेशनल तरीके से दी जाएगी, तो सभी अनुभवात्मक दृष्टिकोण से प्रकृति में सकारात्मक परिवर्तन करने के लिए काम करने लगेंगे। इससे ऐसे समाज का निर्माण होगा, जो एकीकृत व सक्रिय रूप से पर्यावरणीय चुनौतियों से लड़ेगा। इस दौर की और आने वाले दौर की सबसे बड़ी परेशानी पर्यावरण प्रदूषण है। इससे निपटने का यह सही मार्ग हो सकता है। **अशोक बिस्वाल,** पर्यावरणविद्